दीन की राह में आगे बढने की प्यास

मौलाना जलील अहसन नदवी रह.

राहे अमल हिन्दी 'रसूलुल्लाहﷺ के साथियो का हाल'.

'नोट:- हदीष की रिवायत का खुलासा है.'

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

*बुखारी व मुस्लिम, रावी हज़रत सालिम रदी.

रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया, हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रदी (हज़रत सालिम रदी के वालिद) बहुत अच्छे आदमी हे, काश तहज्जुद के लिए उठा करते हज़रत सालिम रदी कहते हे की आपके फरमाने के बाद वालिद का ये हाल हुवा की रात में थोडी देर सोते.

*मुस्लिम, रावी अबू हुरैरा रदी.

मकका से हिजरत करके आने वालो में से जो लोग गरीब और मुहताज थे (जो अल्लाह की राह में खर्च करने से मजबूर थे) रसूलुल्लाहﷺ के पास आए और कहा की हमेशा बाकी रहने

वाली खुशहाली और उंचा दर्ज़ा तो मालदारो को मिले (और हमको ना मिले) आपﷺ ने पूछा ये कैसे? उन्होने कहा हम नमाज़ पढते हे और वो भी पढते हे और हम रोज़े रखते हे और वो भी रोज़े रखते हे (नेकी के इन कामो में तो वो बराबर के शरीक हे) लेकिन वो अल्लाह के रास्ते में खर्च करते हे और हम नही खर्च कर पाते? वो गुलामो को आज़ाद करते हे और इस सिलसिले में रकम खर्च करते हे और हम ऐसा नही कर पाते, आपﷺ ने उनकी बात सुनकर फरमाया क्या में तुम्हे ऐसी बात ना बताउं जिस की बदौलत नेकी की राह में आगे बढ जाने वालो को पा लोगे और जिस की ब-दौलत तुम अपने पीछे आने वालो के आगे रहोगे और तुमसे सिर्फ वो ही लोग बेहतर होंगे जो तुम्हारे जैसा काम करे, उन लोगो ने कहा ज़रूर वो काम बताए ऐ अल्लाह के रसूल! आपﷺ ने फरमाया तुम हर फर्ज़ नमाज के बाद ३३ बार सुबहानल्लाह, ३३ बार अल्लाहु अकबर, और ३३ बार अलहमदुलिल्लाह कह लिया करो.

चुनाचे ये लोग गए और पढने लगे, जब मालदार लोगो को मालूम हो गया की उनके मुहाजिर भाईयो को ये आपﷺ ने

बताया हे तो उन्होने भी ये तसबीह पढनी शुरू कर दी तो वो लोग आपﷺ के पास आए और बताया की हमारे मालदार भाईयो ने सुना तो उन्होने भी शुरू कर दिया, आपﷺ ने फरमाया, ये अल्लाह का फ़ज़्ल हे जिसे चाहता हे देता हे.

इस हदीस से मालूम हुवा की नबी की जमात में दीन की राह में आगे बढने और आखिरत में उंचा दर्ज़ा पाने की कितनी ज्यादा प्यास थी, और ये भी इस हदीस से मालूम हुवा की जो लोग माल खर्च करने की ताकत नही रखते अगर वो जिकर व दुआ और दूसरे नेकी के काम करे तो जन्नत से महरूम ना रहेंगे. और ये भी मालूम हुवा की गुलामो को गुलामी की लानत से निकालना, उन्हे इन्सानियत की सतह पर लाना और समाज में उनको बराबर की हैसियत देना बहुत बडी नेकी हे.

इस हदीस में अल्लाहु अकबर के लिए ३३ बार का ज़िक्र हे, और दूसरी हदीस में अल्लाहु अकबर ३४ बार पढने का जिकर आता हे, बुजुर्गो का इसी पर अमल हे. कुछ और हदीसो में आया हे की आपﷺ ने तीनो को दस-दस बार पढने की शिक्षा दी हे.